International Journal of Creative Research and Innovation (IJCRI)
Vol-6, Issue-1, 2021 | ISSN: 2581-6829, http://www.edusanchar.com

शोध पत्र

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली की वर्तमान शिक्षक शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता

शोधकर्ता
अनिल सोनी

मार्गदर्शिका
डॉ. सावित्री सिंगवाल

''सा विद्या या विमुक्तये''

वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य आत्माभ्युदय सम्बन्धित व्यक्तित्व गुणों को विकसित करना है। वेद हमारी संस्कृति के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते है। वैदिक ग्रन्थों का विकास हजारों वर्षो के अनुभव तथा ज्ञान के संकलन से हुआ है। वैदिक शिक्षा प्रणाली ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की अवधारणा पर आधारित थी।

वैदिक शिक्षा का तात्पर्य वेद, पुराणों का अध्ययन करना मात्र नहीं था, अपितु गुरूकुल नियम तथा भारतीय संस्कृति को समझना भी था। गुरूकुल के वास्तविक स्वरूप में विद्यार्थियों के समक्ष अपने जीवन में उस शिक्षा को ग्रहण कर अपना जीवन यापन व्यवस्थित ढंग से कर सके। वैदिक कालीन शिक्षा का मूल भारतीय शिक्षा दर्शन में निहित है।

प्राचीन शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी गुरूकुल जाकर विद्या अध्ययन करते थे। अपने गुरू की आज्ञा का पालन करते थे। इसका उदाहरण रामायण, महाभारत आदि में देखने को मिलता है।

वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह था कि बालक के मन में ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना का विकास करना था। जैसे व्रत, यज्ञ, उपासना, सन्हया, धार्मिक उत्सवों को मनाना, नित्य प्रार्थना आदि।

वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व का स्वस्थ विकास एवं श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करना था। शिक्षा के द्वारा उनके स्वभाव में परिवर्तन लाकर नैतिक प्रवृत्तियों का विकास किया जाता था एवं छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जाता था। जैसे – आत्म–सम्मान की भावना, आत्म–संयम, आत्म–त्याग, स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति आदि पर बल दिया जाता था।

जबकि वर्तमान समय में आधुनिकीकरण एवं भौतिकता पर अधिक बल दिया जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली छात्र केन्द्रित है। सम्पूर्ण शिक्षा का केन्द्र विद्यार्थी और विद्यालय तक सीमित है। विद्यार्थी के लिए शिक्षा किताबी ज्ञान तक ही सीमिति रह गया है। वर्तमान समय में विद्यालयों को केवल आय का साधन माना जाता है। वर्तमान समय की शिक्षा में विद्यार्थी के न तो चरित्र निर्माण पर जोर दिया जाता है और न ही उसके व्यक्तित्व निर्माण पर।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली बुहत ही सरल एवं प्रगतिशील है। वर्तमान समय में न केवल शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है अपितु अन्य रूचियों जैसे नृत्य, संगीत, कला आदि अनेक रूचियों पर भी ध्यान दिया जाता है किन्तु नैतिक एवं मानवीय मूल्य गौंण होते जो रहे है।

वर्तमान समय में जहां हमने आधुनिकीकरण तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विकास किया है और हमने नित नए प्रयोग किए है। वही हम वैदिक शिक्षा प्रणाली में उन गुरूकुल के नियमों व परम्पराओं को भूलते जा रहे है। जो श्रेष्ठ मानवीय एवं चारित्रिक विकास में सहायक है।

प्राचीन शिक्षा जहां पेड़ो के नीचे मौखिक रूप से हुआ करती थी जिसे विद्यार्थी अपने मस्तिष्क में लिखते थे क्योंकि उस समय विद्यार्थी गुरू

द्वारा दिये गये प्रवचन एवं व्याख्यान को आत्मसात करते थे। यह शिक्षा उनका जीवन भर मार्गदर्शन करती थी।

इसके विपरित आधुनिक शिक्षा नोटबुक और किताबों से आगे बढ़कर प्रोजेक्टर, टेबलेट और गूगल तक सीमित रह गई है। अतः आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का अभाव है।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ होता है, कुछ सीखकर अपने को पूर्ण बनाना। किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदण्ड होती है। हम सभी जानते हैं शिक्षा हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान होता है। पहले शिक्षा गुरूकुल में गुरू दिया करत थे लेकिन आजकल के आधुनिक युग में विद्यालय, महाविद्यालय में शिक्षक देते है। प्राचीन काल में अभिभावक भी गुरू पर पूर्ण विश्वास करके गुरू के अध्यापन में दखल नहीं देते थे। गुरू स्वछंद रहकर बिना किसी दबाव के सम्पूर्ण विधाओं व कौशल युक्त जीवन उपयोगी शिक्षा प्रदान करते थे। छात्रों को औपचारिक शिक्षा के साथ–साथ मानसिक, आध्यात्मिक, शारीरिक और व्यावहारिक रूप से भी सक्षम बनाया जाता था।

आधुनिक काल में स्थिति इसके विपरित है। अभिभावक शिक्षकों पर विश्वास नहीं करके, विभिन्न कानून के नियमों का हवाला देकर अपने बच्चे को उत्साहित करते है। गुरू–शिष्य परम्परा गौंण होती जा रही है। शिक्षक और छात्र के बीच जो एक अटूट बंधन था, वह पूर्णतः समाप्त होता जा रहा है। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा को वर्तमान शिक्षा प्रणाली से जोड़ना अतिआवश्यक है।

निष्कर्ष

''शिक्षा मनुष्य को न केवल संस्कारवान बनाती है। बल्कि व्यक्ति में सामाजिक गुणों का विकास करती है।'' यह विचारधारा पौराणिक काल (वैदिक काल) से चली आ रही है। हमारे विचारों में हम जो आज हमारे आस–पास के वातावरण को देखते है तथा प्रौद्योगिकी एवं नवीन आविष्कारों से स्वयं को प्रभावित मानते है वह आज के ज्ञान का नया स्वरूप है। लेकिन वास्तव में हमे इसके नियमानुसार उपयोग के लिए वैदिक जीवन शैली को अपनाना होगा। क्योंकि ज्योतिष विज्ञान, खगौल विज्ञान, भूगोल विज्ञान, में होने वाली घटनाओं का परम्परागत विधियों से निर्णय व निदान वैदिक शिक्षा में उपलब्ध है।

अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि वर्तमान शिक्षा के स्वरूप को वैदिक शिक्षा के नियमों के अनुसार स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि इसका स्वरूप हमारी शिक्षा पद्धति व इसके महत्व को बनाये रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अवस्थी, एस. (1984), ''आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा।''
- अथवाल विकास (2010), मर्यादा सीखे रामायण से।
- झा.एच. (1972), ''प्राचीन भारत में शिक्षा वाल्मीकि रामायण के विशेष संदर्भ में।'' पीएच.डी., एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा
- केसरी, एच. (1986), ''आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में गीता एक सीखने की प्रक्रिया के रूप में'', पी.एच.डी. सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
- पारीक मथुरेश्वर – ''उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा''

- पाण्डेय रामशकल – ''भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास''
- शर्मा रजनी – ''समकालीन भारत और शिक्षा''
- शर्मा आर.के. – ''शिक्षा के उद्देश्य ज्ञान एवं पाठ्यचर्या''
- त्यागी गुरूसरन दास– ''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास डी. ई. आई. दयालबाग आगरा।